

बावरे बीज

विशाखा चंचानी



बावरे बीज

विशाखा चंचानी

किन्न ऐंजलीन एवं उपेश प्रधान



in association with



NAYDANTA



आए हैं बीजू भैया,

बावरे बीजू।

लाए हैं बीज, भैया,

बावरे बीज।



बीजू के बीज, चमत्कार चीज़ /
कादिर मियाँ, दिस वे प्लीज़ /



रंग, ढंग, आकार, कुछ इस प्रकार:

काँटदार काले
चितकबरे चौर

अलबेले उड़नखटोले



फौरन फैलै फ़िरंगी

साधु स्वदेशी

अनौखी स्क आँख

बेताब बैराख

लज्जित लजातू

पल भर पटाखा धम धड़ाका

पंखी चैखट

चिप चिपे चिप्पट

बावरे बीज



आईए, बीज ले जाईए

बोरी भर
गठरी भर
झोली भर
पाकिट भर
मुट्ठी भर



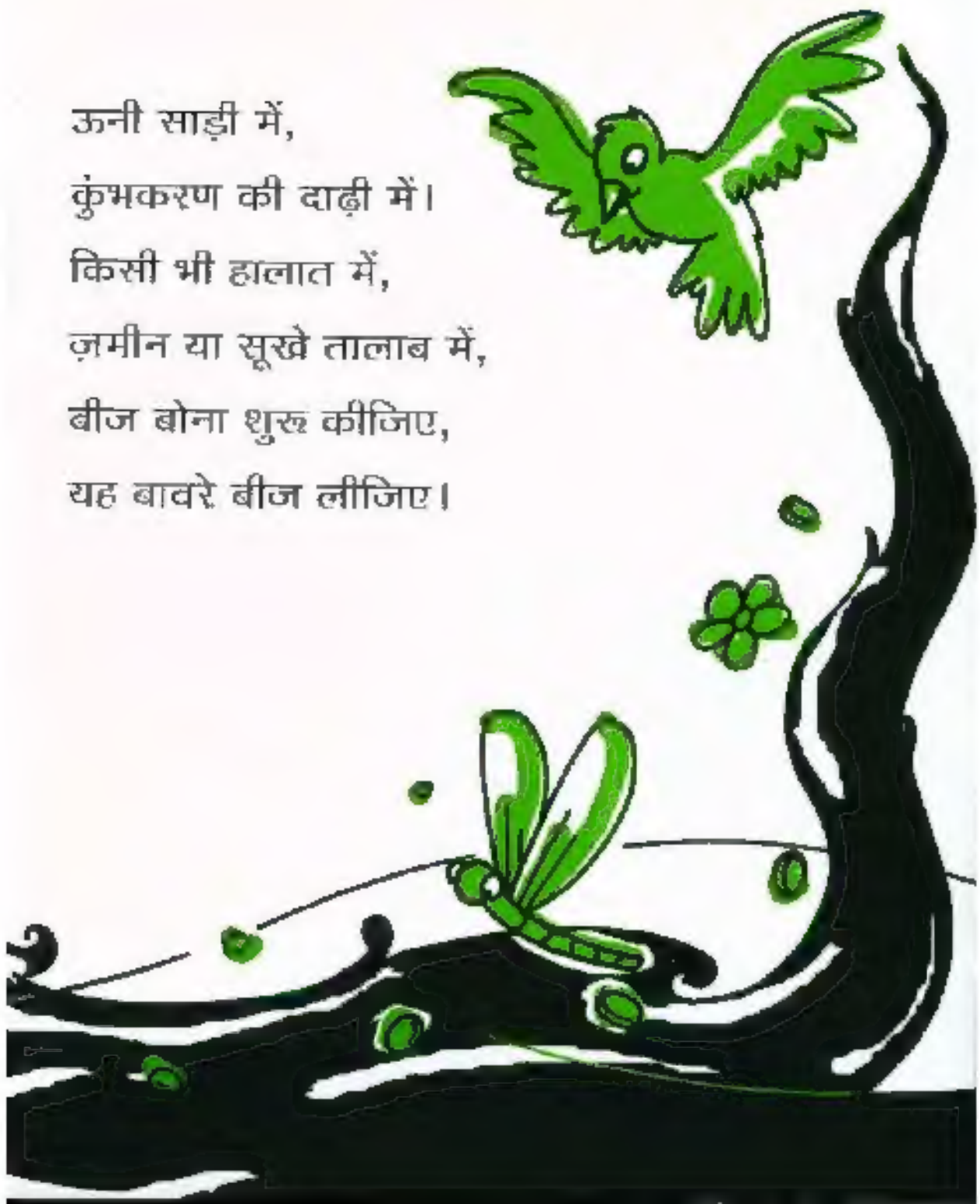
बावरे बीजू के बीज लीजिए,
बीज बोना शुरू कीजिए।



गाँव में, शहर में,
किराए के घर में,
दीवारों की दरारों में,
कबाड़ी मोटर कारों में,
छोटे लोटे में,
पीले पत्तीले में,



ऊनी साड़ी में,
कुंभकरण की दाढ़ी में।
किसी भी हालात में,
ज़मीन या सूखे तालाब में,
बीज बोना शुरू कीजिए,
यह बावरे बीज लीजिए।



माफ़ कीजिए !



पैसा न दीजिए !

न रुपैया

न अठन्नी

न चवन्नी

एक फूटी कौड़ी तक नहीं

बीजू के बीज

वाह, क्या चीज़ !

एकदम “फ्री” जी

“नो फीज़” !



पहला आहार कुछ इस प्रकार



घास फूस,

सड़े आम का जूस,

कोयलों का चिवड़ा,

बिना स्वाद छिलकों का सलाद,

चाय पत्ती, इत्यादि . . .

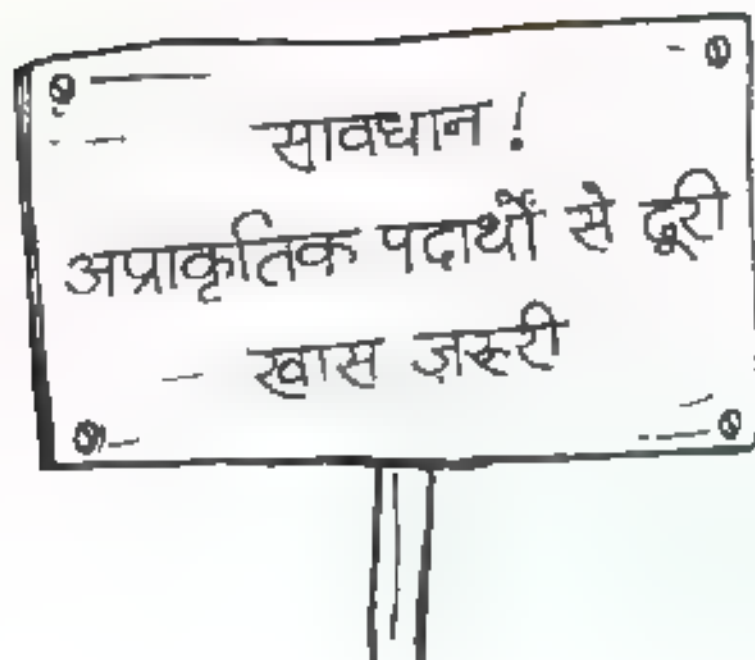




कुछ धूप, छँव,
पहली बारिश, ताजी हवा,
और हँ,
एक कमंडल पानी न भूलना !



एक विशेष सूचना



कहते हैं
दूर पहाड़ियों से,
घनी झाड़ियों से,
झरनों, नदी नालों से,
वहते यह बीज आए हैं।

चिड़ियों के घोंसलों से,
मृषकों के मौसों से,
पत्थर के पोलों से,
उड़ते फिरते हवाओं में
बरसते, बीजू ने पाए हैं।



बीज बोइए!
खुश होइए!



कुछ ही क्षणों में,

मिट्टों में,

घंटों में

दिनों में,

महीनों में,

सालों में,

रातों रात ,

बातों बात .



घुपचाप खरटे दोते,

थक्कम थक्की करतें,

गहरी साँस भरतें,

बीज के निकल आँगे पर,
आसमान से बातें कर,
हवा के साथ डोलेंगे,
आप के साथ बोलेंगे,
लंबी चौड़ी कहानी सुनाएँगे . . .



करामती केंचुओं की,
कलकत्ती कौओं की,
झरझरपूर के झींगरों के झरझर की,
बड़बड़पूर के बंदरों के बड़बड़ की,

फूल की,
पत्ते की,
डाली की,
जड़ की, धड़कते धड़ की . . .



सुनिए और देखते जाइए!

बावरे बीज की बावरी कहानी,
हवा में कलैया करेगी,
मौसम के साथ अपना रचैया बदलेगी।



बीज "फ्री",
कहानी भी!
एकदम "नैचरल", ले जाइए जी!





सुभी दी, दिस वै प्लीज़!



Other picture books in Hindi

देखो बांद।
मुझे सोना है
रंगप्रसद राइका
ईश पूरा
एकरी दोऊरी
कोलाका
बालू भालू
सुनसुनू घोषा

Bawre Beej (Hindi)

ISBN 81-8146-053-7

© 2004 Tulika Publishers

© 2004 Vishakha Chavhan

First published in India, 2004

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any form or by any means – graphic, electronic or mechanical – without the prior written permission of the publisher.

Published by

Tulika Publishers

13 Prithvi Avenue, Abhiramapuram, Chennai 600018, India

email kaka@tulikabooks.com & tulikabooks@vsnl.com

website www.tulikabooks.com

and

Navdanya

A-60, Hauz Khas, New Delhi 110016, India

email vishva@vsnl.com & rice@vsnl.com

website www.vishva.net & www.navdanya.org & www.bijaspiceherb.org

Printed and bound at

the ind-com press, 393 Velachery Main Road, Vijaynagar, Velachery,

Chennai 600042, India

Distributed by

Goodbooks Marketing Pvt. Ltd, 39 Puvvath Street, Abhiramapuram, Chennai 600018, India

website www.goodbooksindia.com

For more information about Tulika or to order books visit our website www.tulikabooks.com

काँटेदार काले, अलबेले उड़नखटोले, लज्जित लजालू या
पंखी पैरशूट . . . बीजू भैया के बीज हैं कितने अनोखे!
यह मजेदार, मनमोहक, बावरी चित्र-पुस्तक बच्चों को बीज,
पौधों और धरती के गहरे रिश्ते से परिचय कराती है।

विशखा चंघानी चित्रकार व लेखिका हैं। वे हिंदी और अंग्रेजी में लिखती हैं।
अन्होंने कई सारी बच्चों की किताबों का चित्रण किया है।

इस पुस्तक को ऐंजलीन और उपेश प्रधान ने चित्रित किया है। ऐंजलीन ग्रेफ़िक्स
डिज़ाइनर भी हैं और उपेश ऐनिमेशन करते हैं।



ISBN 81-8146-053-7
Rs 30 only
Hindi / For ages 5+

